संस्कार सुरभि

बाल संस्कार केन्द्रों के लिए सितम्बर माह का पाठ्यक्रम

प्रतिभा खोज स्पर्धा के लिए प्रश्नों का प्रारूप

'जीवन रसायन' पुस्तक पर आधारित प्रश्न

रिक्त स्थान भरो :

१. किसी भी चीज को .... से अधिक मूल्यवान कभी मत समझो।

२. प्रकृति प्रसन्नचित्त और .... को हर प्रकार से सहायता करती है।

३. सद्गुरु के चरणकमलों में मन लगाने से .... से मुक्ति हो जाती है।

'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक पर आधारित प्रश्न

निम्नलिखित कथन किसने कहे :

१. ऐ नीम ! इधर क्या खड़ा है ? जा उधर हटकर खड़ा रह !

२. सच्चे राजा-महाराजा तो संत ही हैं। जो उनकी शरण जाता है, वही सच्चा सुख और सायुज्य मुक्ति पाता है। **(उत्तर अगले अंक में)**

छोटी-सी युक्ति

बाल संस्कार केन्द्र में बच्चों की संख्या बढ़े, इसके लिए कुछ आवश्यक बातें :

* बच्चों के माता-पिता को विश्वास में लें। बाल संस्कार केन्द्र से होनेवाले लाभ, बच्चों के अनुभव उन्हें बतायेंगे तो वे अपने बच्चों को नियमितरूप से केन्द्र में भेजेंगे।

* बच्चे तब तक लगातार आते हैं जब तक उन्हें केन्द्र में अपनत्व लगता है। इसके लिए केन्द्र में छोटी-छोटी सेवाएँ, जैसे तिलक लगाना, प्रसाद बाँटना, आरती करना, दूसरे बच्चों को सिखाने के लिए आगेवान बनना आदि सेवाएँ बच्चों को दे सकते हैं। बच्चे घर से प्रसाद ले आयें। आरती करके भोग लगा के प्रसाद बाँटें।

* शिक्षक स्वयं आसपास में जाकर केन्द्र का प्रचार भी करें। पहचानवाले अभिभावकों अथवा केन्द्र में आनेवाले २-३ बच्चों को साथ में ले जा सकते हैं। 'बाल संस्कार, संस्कार दर्शन, दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' जैसे सत्साहित्य साथ में रखें।

सोचो जरा, करो मन में विचार

दिये गये शब्दों को सही क्रम में रखकर 'श्री आशारामायण' की पंक्तियाँ पहचानें।

१. त ब ने य ह न सं गा तो म हा

२. ई आ हो ग शा आ सु ये सां रा म म ल से

(उत्तर अगले अंक में)

हमारा प्यारा बाल संस्कार

परम पूज्य सद्गुरुजी के श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम ! पूज्य बापूजी की प्रेरणा से चल रहे हमारे बाल संस्कार केन्द्र में आनेवाले विद्यार्थी बहुत ही मेधावी और कुशाग्र बुद्धिवाले बन रहे हैं। केन्द्र में आनेवाले छठी कक्षा के विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों को पढ़ाई में चुनौती देने लगे हैं। इतना ही नहीं, ये विद्यार्थी अपने विद्यालय में शिक्षकों द्वारा उपस्थिति लेने पर 'हरि ॐ' बोलते हैं। पहले-पहल शिक्षकों द्वारा मना करने पर भी बापूजी के इन बहादुर बच्चों ने 'हरि ॐ' का ऐसा डंका बजाया कि अब तो शिक्षक रजिस्टर खोलने से पहले ही कहते हैं, 'हरि ॐ बोलनेवालों को मना नहीं है।' इससे दूसरे बच्चे भी 'हरि ॐ' बोलने लगे हैं।

- मग्गाराम भाई
रा. प्रा. विद्यालय, धोलाडेर (राज.)।
मो. ०९९५०२१९९५०.

बुद्धि-परीक्षण

गौदान, विद्यादान, स्वर्णदान, हैं बहुत से दान।
है वह कौन-सा दान,
जिसे पा के व्यक्ति हो जाता महान ॥
(उत्तर अगले अंक में)

निबंध लेखन स्पर्धा के परिणाम

लो.क.से. के अंक - १६८ में 'निबंध लेखन स्पर्धा' आयोजित की गयी थी, जिसमें विजयी होनेवाले प्रतियोगी निम्नलिखित हैं :

पहला स्थान : नीरज कुमार, कोलकाता **दूसरा स्थान** : सुभस्मिता होता, भुवनेश्वर (ओड़िशा). **तीसरा स्थान** : दिशा के. सोजित्रा, गोंडल, जि. राजकोट (गुजरात). **चौथा स्थान** : नितिन शर्मा, इलाहाबाद (उ.प्र.). **पाँचवाँ स्थान** : राज कुमार शर्मा, गारिया, कोलकाता। **छठा स्थान** : ऐश्वर्या दिलीप देशमुख, आकुर्डी, पुणे (महा.). ❐

✻ अंक १६९ की 'जीवन विकास प्रश्नोत्तरी' के उत्तर : अ. (१) ३ (२) २ (३) ४
ब. (१) ङ (२) क (३) घ (४) ग (५) ख

✻ 'श्री आशारामायण' पर आधारित प्रश्नों के उत्तर : **(१)** ३ **(२)** २

✻ सोचो जरा करो मन में विचार... उ. : ९ आम

✻ बुद्धि-परीक्षण के उत्तर : (१) गुरुपूर्णिमा (२) भक्त प्रह्लाद (३) गुरुभक्त एकलव्य

✻ पिछले अंक के 'स्वाध्याय' के उत्तर :

(१) पूर्ण भूख का दो तिहाई। (२) पहले किया हुआ भोजन पूर्णतः पच जाने के बाद। (३) बुद्धि का नाश होता है। (४) भोजन की इच्छा में भी भूख मिटाने के लिए पानी पीने से। (५) मानसिक पूजा। (६) जिसके मुख में गुरुमंत्र है उसके। (७) गुरुचरणों में। (८) आनंदमयता का अभ्यास।

विशेष तिथियाँ

२१ सितम्बर : बुधवारी अष्टमी (सुबह ७.३१ तक)

२२ सितम्बर : गुरुपुष्यामृत योग (रात्रि २.४४ से २३ सितम्बर सूर्योदय तक)

'इन दिनों किया गया जप-ध्यान दस हजार गुना फल देता है। एकाग्रता, तत्परता, संयम और श्रद्धा - ये चारों पूर्ण हों तो इनकी विशेषता से लाख गुना फल होता है। अतः इनका लाभ स्वयं भी लें और दूसरों को भी प्रेरित करें।'

- पूज्य बापूजी

२९ सितम्बर : पूज्य बापूजी का ४७वाँ 'आत्मसाक्षात्कार-दिवस' ।

केन्द्रों में साक्षात्कार-दिवस धूमधाम से मनायें तथा श्री आशारामायण का पाठ करवायें। पूज्य बापूजी का यह दिव्य संदेश अवश्य पढ़कर सुनायें :

आत्मसाक्षात्कार कठिन नहीं

धरती पर तो रोज करीब डेढ़ करोड़ लोगों का जन्मदिवस होता है। शादी-दिवस और पदोन्नति-दिवस भी लाखों लोगों का हो सकता है। शपथ-दिवस भी कई नेताओं का हो सकता है। ईश्वर के दर्शन का दिवस भी दर्जनों भक्तों का हो सकता है लेकिन ईश्वर-साक्षात्कार दिवस तो कभी-कभी और कहीं-कहीं किसी-किसी विरले का देखने को मिलता है। आत्मसाक्षात्कारी महापुरुष का अवतरण होता है तभी देखने-सुनने को मिलता है।

हे मनुष्य ! तू भी उस सत्स्वरूप परमात्मा के साक्षात्कार का लक्ष्य बना। वह कोई कठिन नहीं है, बस उससे प्रीति हो जाय।

- पूज्य बापूजी